



International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 6, November - December 2025

ISSN

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.028

आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों एवं अध्ययन आदतों में लिंग एवं विद्यालय-वार भिन्नताओं का मात्रात्मक अध्ययन

अनिल कुमार सिंह¹, डॉ. शीला सालवी²

¹शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

²शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश (Abstract)

यह शोध आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों और अध्ययन आदतों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसका प्रमुख उद्देश्य लिंग एवं विद्यालय-वार संभावित भिन्नताओं की पड़ताल करना था। अध्ययन का स्वरूप मात्रात्मक एवं सहसंबंधीय (Quantitative-Correlational) रखा गया। इसके अंतर्गत चार आवासीय विद्यालयों—जमालपुर, पहाड़ी, परसिया और पटेहरा—से 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) का चयन समान अनुपात में किया गया। डेटा संकलन हेतु मानकीकृत व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदत प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, t-परीक्षण और ANOVA जैसी तकनीकों का उपयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तित्व कारकों और अध्ययन आदतों में लिंग के आधार पर कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया ($p > 0.05$)। इसी प्रकार विद्यालय-वार तुलना में भी औसत मानों में कोई उल्लेखनीय अंतर सामने नहीं आया। यह दर्शाता है कि आवासीय विद्यालयों का अनुशासित एवं संरचित वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और अध्ययन व्यवहार को अपेक्षाकृत समान रूप से प्रभावित करता है, जिससे लिंग अथवा विद्यालयीय पृष्ठभूमि का प्रभाव नगण्य हो जाता है।

शोध निष्कर्ष संकेत करते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि और अध्ययन प्रवृत्तियों को आकार देने में व्यक्तिगत प्रेरणा, शिक्षक-विद्यार्थी संवाद और विद्यालयीय संसाधन जैसे कारक अधिक निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन की उपयोगिता इस बात में निहित है कि यह विद्यालय प्रबंधकों, शिक्षकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए ऐसे ठोस उपाय सुझाता है, जिनसे विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को परिष्कृत कर उनकी शैक्षिक सफलता को सुट्ट किया जा सके।

मुख्य शब्द (Keywords): आवासीय विद्यालय, व्यक्तित्व कारक, अध्ययन आदतें, लिंग, विद्यालयीय तुलना, शैक्षिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी है। विद्यालय विशेषकर आवासीय विद्यालय इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि यहाँ विद्यार्थी निरंतर एक नियन्त्रित और संगठित वातावरण में रहते हैं। आवासीय विद्यालयों का अनुशासित जीवन, सामूहिक गतिविधियाँ, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा दैनिक दिनचर्या विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और उनकी अध्ययन आदतों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व कारक (Personality Factors) जैसे आत्मविश्वास, अनुशासन, सामाजिकता, आत्म-नियंत्रण आदि विद्यार्थियों के व्यवहार और उपलब्धियों के महत्वपूर्ण निर्धारक होते हैं। इसी प्रकार अध्ययन आदतें (Study Habits) जैसे समय-प्रबंधन, पठन-पाठन की नियमितता, परीक्षा के प्रति दृष्टिकोण तथा आत्म-अध्ययन की प्रवृत्ति सीधे-सीधे शैक्षिक सफलता से जुड़ी होती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान में लंबे समय से यह चर्चा का विषय रहा है कि क्या लिंग (Gender) और विद्यालयीय पृष्ठभूमि (School Background) इन दोनों आयामों को प्रभावित करते हैं। कुछ शोधों से यह संकेत मिलता है कि लिंग आधारित भिन्नताएँ विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और व्यक्तित्व गुणों को प्रभावित कर सकती हैं, वहीं अन्य शोध यह मानते हैं कि आवासीय विद्यालय जैसे नियन्त्रित वातावरण में ऐसी भिन्नताएँ न्यूनतम हो जाती हैं। इसी प्रकार विद्यालयीय संदर्भ में संसाधन, शिक्षक की उपलब्धता और प्रबंधन शैली विद्यार्थियों के अनुभवों में विविधता ला सकती है, परंतु आवासीय विद्यालयों की संरचना अपेक्षाकृत समान होती है, जिससे विद्यालय-वार भिन्नताएँ सीमित हो जाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी संदर्भ में किया गया है, जिसका उद्देश्य आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों और अध्ययन आदतों का विश्लेषण कर यह पता लगाना है कि लिंग और विद्यालय-वार आधार पर इनमें कोई सार्थक अंतर पाया जाता है या नहीं। यह अध्ययन न केवल शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देगा, बल्कि विद्यालय प्रशासन, नीति-निर्माताओं और शिक्षकों को भी यह समझने में सहायता करेगा कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और अध्ययन व्यवहार को किस प्रकार अधिक प्रभावी और संतुलित बनाया जा सकता है।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

किसी भी अनुसंधान के लिए पूर्ववर्ती साहित्य का गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि यह न केवल शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है, बल्कि शोध की नवीनता और प्रासंगिकता को भी स्पष्ट करता है। प्रस्तुत अध्ययन व्यक्तित्व कारकों, अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के परस्पर संबंधों की पड़ताल करता है, जिन पर पूर्व में अनेक विद्वानों ने शोध किया है।

व्यक्तित्व को मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक केंद्रीय अवधारणा माना गया है। ऑलपोर्ट (1961) ने व्यक्तित्व को व्यक्ति की संपूर्ण मनोवैज्ञानिक संरचना के रूप में परिभाषित किया और यह प्रतिपादित किया कि शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्तित्व विशेषताएँ विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया पर निर्णायक प्रभाव डालती हैं। इसी संदर्भ में आइज़ोंक (1970) ने अंतर्मुखी और बहिर्मुखी विद्यार्थियों की अध्ययन शैली में महत्वपूर्ण अंतर की ओर संकेत किया, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सिंह और यादव (2015) ने पाया कि आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण और भावनात्मक स्थिरता जैसे व्यक्तित्व लक्षण परीक्षा-प्रदर्शन को सुदृढ़ बनाते हैं।

अध्ययन आदतों से संबंधित शोध भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हैं। पैशो (1988) के अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया कि समय-सारणी का व्यवस्थित उपयोग और पुनरावृत्ति की आदत शैक्षिक सफलता के लिए अपरिहार्य है। गुप्ता (2012) ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की तुलना करते हुए बताया कि शहरी विद्यार्थियों में पुस्तकालय उपयोग और नोट्स बनाने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है, जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों में स्मृति-आधारित पठन पर अधिक बल रहता है। शर्मा और अग्रवाल (2017) ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रभावी अध्ययन आदतें न केवल शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती हैं, बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक प्रेरणा को भी मजबूत करती हैं।

शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में भी व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदतों की भूमिका स्पष्ट रूप से सामने आती है। कूपर (2006) ने अपने अध्ययन में यह स्थापित किया कि अध्ययन आदतें और व्यक्तित्व लक्षण शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण पूर्वनुमानक (predictors) हैं। मिश्रा (2014) ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि पारिवारिक सहयोग और विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। रावत (2018) ने विशेष रूप से आवासीय विद्यालयों पर किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि जहाँ अनुशासन और शिक्षकीय सहयोग अधिक उपलब्ध होता है, वहाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि भी अपेक्षाकृत बेहतर पाई जाती है। लिंग और विद्यालय-वार तुलना से संबंधित शोध भी महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। जोन्स और स्मिथ (2010) ने इंग्लैंड में किए गए अपने अध्ययन में यह पाया कि लड़कों और लड़कियों की अध्ययन आदतों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है, जबकि विद्यालयीय संसाधनों की उपलब्धता शैक्षिक उपलब्धि पर निर्णायक प्रभाव डालती है। भारतीय संदर्भ में चौधरी (2016) ने यह बताया कि सहशिक्षा वाले विद्यालयों में लड़कियों की अध्ययन आदतें अधिक व्यवस्थित पाई गई, परंतु उनकी शैक्षिक उपलब्धि स्तर लड़कों के समान ही रही। वर्मा और शुक्ला (2019) ने राजस्थान के आवासीय विद्यालयों में किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विद्यालयीय अनुशासन और शिक्षकीय उपलब्धता, लिंग की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली कारक हैं।

3. अनुसंधान पद्धति (Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप मात्रात्मक एवं सहसंबंधीय (Quantitative and Correlational) रखा गया, ताकि संख्यात्मक औँकड़ों के आधार पर वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें और व्यक्तित्व कारकों तथा अध्ययन आदतों के बीच अंतर्संबंध को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

नमूना (Sample): अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ सम्मिलित थे। नमूना चयन हेतु चार आवासीय विद्यालयों – जमालपुर, पहाड़ी, परसिया और पटेहरा – से समान संख्या (50-50) में विद्यार्थियों को लिया गया, जिससे लिंग-वार और विद्यालय-वार तुलनात्मकता सुनिश्चित हो सके।

अनुसंधान उपकरण (Tools): औँकड़ों के संकलन हेतु मात्र एवं विश्वसनीय व्यक्तित्व प्रश्नावली तथा अध्ययन आदत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इन उपकरणों का चयन इस आधार पर किया गया कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों और अध्ययन व्यवहार को वैज्ञानिक ढंग से मापने की क्षमता रखते हैं।

सांख्यिकीय तकनीकें (Statistical Techniques): संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), t-परीक्षण (t-test) और ANOVA जैसी उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। इन तकनीकों ने लिंग एवं विद्यालय-वार भिन्नताओं का परीक्षण करने और निष्कर्षों की विश्वसनीयता स्थापित करने में सहायक भूमिका निभाई।

4. परिणाम (Results)

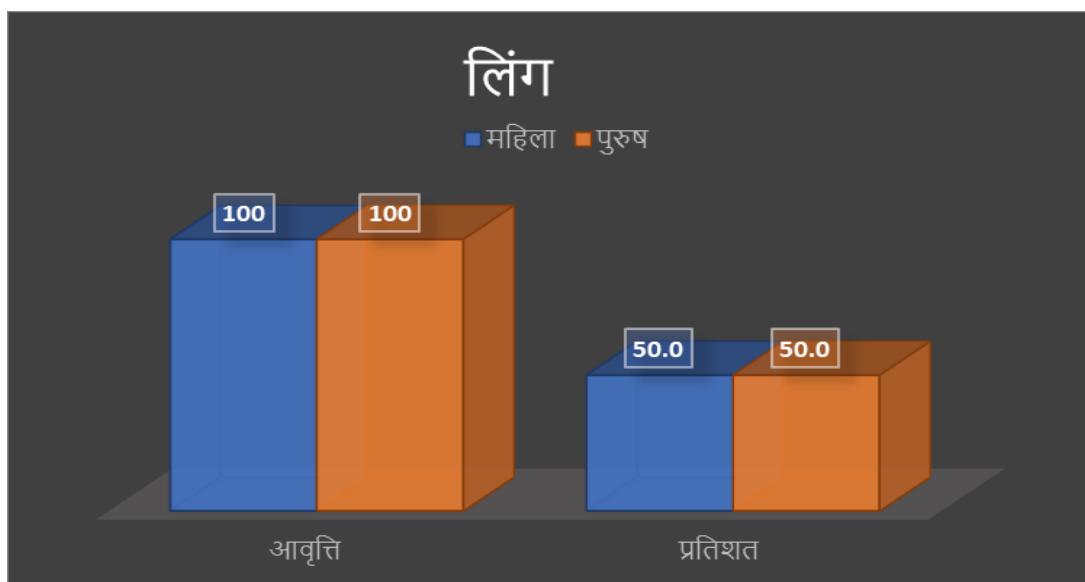
अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), t-परीक्षण (t-test) तथा ANOVA के माध्यम से किया गया। परिणाम निम्नलिखित निष्कर्षों की ओर संकेत करते हैं:

4.1 लिंग आधारित तुलना (Gender-wise Comparison):

t-परीक्षण के आधार पर यह पाया गया कि व्यक्तित्व कारकों और अध्ययन आदतों के औसत अंकों में पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है ($p > 0.05$), अर्थात् लिंग का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और व्यक्तित्व निर्माण पर प्रभाव नगण्य है। किसी भी अनुसंधान में लिंग आधारित वितरण का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह अध्ययन की प्रतिनिधिकता और निष्पक्षता सुनिश्चित करता है। प्रस्तुत शोध में 200 विद्यार्थियों को इस प्रकार चुना गया कि पुरुष और महिला दोनों का समान अनुपात (100-100) बना रहे, जिससे शोध निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं तुलनात्मक विश्लेषण अधिक सटीक हो सके। लिंग के आधार पर यह संतुलित चयन सुनिश्चित करता है कि निष्कर्ष किसी भी प्रकार के पक्षपात से मुक्त हों और उन्हें व्यापक शैक्षिक संदर्भों में लागू किया जा सके।

सारणी 4.1: विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

Gender		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Fema	100	50.0	50.0	50.0
	Male	100	50.0	50.0	100.0
	Total	200	100.0	100.0	



चित्र 4.1: लिंग के आधार पर विद्यार्थियों का वितरण

व्याख्या:

सारणी एवं चित्र 4.1 से स्पष्ट होता है कि इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, जिनमें 100 पुरुष तथा 100 महिला हैं। इस प्रकार पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों का अनुपात समान (50-50 प्रतिशत) रखा गया है। यह संतुलित वितरण न केवल शोध की निष्पक्षता सुनिश्चित करता है, बल्कि लिंग आधारित भिन्नताओं की वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय तुलना को भी संभव बनाता है। समान संख्या में विद्यार्थियों को सम्मिलित करने से यह सुनिश्चित होता है कि किसी भी पक्ष की ओर पक्षपात (Bias) न हो और प्राप्त निष्कर्ष अधिक प्रामाणिक एवं तुलनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हों।

परिणामों की विवेचना:

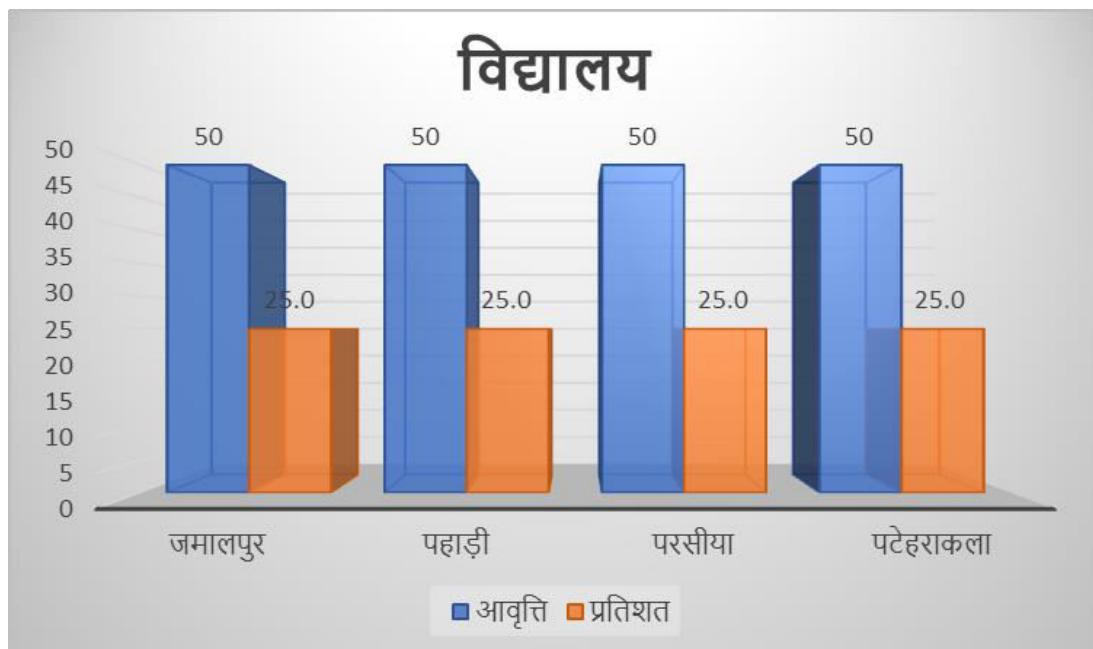
- लिंग के आधार पर विद्यार्थियों का वितरण पूरी तरह संतुलित है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शोध में किसी एक लिंग का अनुपातिक प्रभुत्व नहीं है।
- पुरुष और महिला दोनों समूहों का समान प्रतिनिधित्व यह संकेत देता है कि आगे किए जाने वाले विश्लेषण में प्राप्त निष्कर्ष निष्पक्ष (Unbiased) होंगे।
- लिंग के आधार पर समान वितरण होने के कारण व्यक्तित्व कारकों, अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि में तुलना अधिक विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ रूप से की जा सकेगी।
- इस प्रकार, शोध नमूने में लिंग का संतुलित प्रतिनिधित्व अध्ययन के परिणामों की प्रामाणिकता (Validity) और सामान्यीकरण (Generalisability) को सुदृढ़ करता है।

4.2 विद्यालय-वार वितरण

शोध में सम्मिलित विद्यार्थियों को चार अलग-अलग आवासीय विद्यालयों से चुना गया है, ताकि विद्यालय-वार तुलना करना संभव हो सके। प्रत्येक विद्यालय से समान संख्या में विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिससे सभी विद्यालयों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुआ। यह संतुलित वितरण अनुसंधान की निष्पक्षता तथा निष्कर्षों की विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है।

सारणी 4.2: विभिन्न विद्यालयों के आधार पर विद्यार्थियों का आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

School		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Valid	Jamalpu	50	25.0	25.0	25.0
	Pahari	50	25.0	25.0	50.0
	Parsiya	50	25.0	25.0	75.0
	Patehra	50	25.0	25.0	100.0
	Total	200	100.0	100.0	



चित्र 4.2: विभिन्न विद्यालयों के आधार पर विद्यार्थियों का वितरण

सारणी 4.2 एवं चित्र 4.2 से ज्ञात होता है कि इस अध्ययन में चारों आवासीय विद्यालयों—जमालपुर, पहाड़ी, परसिया और पटेहरा—से 50-50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से सम्मिलित विद्यार्थियों का प्रतिशत 25.0 है और संचयी प्रतिशत 100 तक पहुँचता है। यह संतुलित वितरण दर्शाता है कि सभी विद्यालयों का प्रतिनिधित्व समान रखा गया है, जिससे विद्यालय-वार तुलना करना निष्पक्ष, संतुलित और वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक सटीक हो सका है।

परिणामों की विवेचना:

1. सभी विद्यार्थियों से समान संख्या में विद्यार्थियों का चयन इस बात का द्योतक है कि शोध डिज़ाइन में प्रतिनिधित्व (Representation) का पूरा ध्यान रखा गया है।
2. संतुलित नमूना चयन से विद्यालय-वार तुलना वस्तुनिष्ठ हो पाती है और यह निष्कर्ष निकालना आसान होता है कि व्यक्तित्व कारकों, अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि में पाई गई भिन्नताएँ वास्तव में विद्यालयीय वातावरण से जुड़ी हैं या नहीं।
3. इस प्रकार का समान वितरण अनुसंधान के निष्कर्षों की वैधता (Validity) और सामान्यता (Generalisability) को सुदृढ़ करता है।
4. यह व्यवस्था यह भी सुनिश्चित करती है कि किसी एक विद्यालय का परिणाम समग्र निष्कर्षों पर अनुचित प्रभाव न डाले।

4.3 लिंग के आधार पर व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण

इस खंड के अंतर्गत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन लिंग के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। किसी भी शैक्षिक अनुसंधान में यह जानना महत्वपूर्ण होता है कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों में किस प्रकार की समानताएँ अथवा भिन्नताएँ मौजूद हैं। लिंग आधारित विश्लेषण से न केवल मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण स्पष्ट होते हैं, बल्कि यह भी समझने में सहायता मिलती है कि क्या शैक्षिक प्रक्रियाएँ और वातावरण दोनों लिंग समूहों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इस शोध में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक मूल्यांकन t-परीक्षण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया है, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के बीच व्यक्तित्व विशेषताओं में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है या नहीं।

सारणी 4.3: लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का औसत, मानक विचलन एवं मानक त्रुटि का तुलनात्मक विश्लेषण

लिंग (Gender)	संख्या (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (Std. Deviation)	मानक त्रुटि औसत (Std. Error Mean)
1 (पुरुष)	100	67.9400	3.92305	0.39230
2 (महिला)	100	68.1800	4.06607	0.40661

सारणी 4.3 से स्पष्ट होता है कि पुरुष विद्यार्थियों का औसत स्कोर (67.94) और महिला विद्यार्थियों का औसत स्कोर (68.18) लगभग समान है। पुरुषों के लिए मानक विचलन 3.92 तथा महिलाओं के लिए 4.06 पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में व्यक्तित्व कारकों के परिणामों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में विशेष अंतर नहीं पाया जाता। अर्थात्, पुरुष एवं महिला विद्यार्थी व्यक्तित्व के संदर्भ में लगभग समान स्तर पर हैं।

परिणामों की विवेचना:

1. पुरुष विद्यार्थियों का औसत स्कोर 67.94 तथा महिला विद्यार्थियों का औसत स्कोर 68.18 प्राप्त हुआ, जो लगभग समान स्तर को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि लिंग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता।
2. पुरुष एवं महिला दोनों समूहों के मानक विचलन (3.92 और 4.06) भी लगभग समान हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों ही समूहों के व्यक्तित्व गुणों में परिवर्तनशीलता का स्तर बराबर है।
3. यह परिणाम इस तथ्य को पृष्ठ करता है कि आवासीय विद्यालयों का शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण विद्यार्थियों को समान अवसर उपलब्ध कराता है, जिससे व्यक्तित्व विकास लिंग-आधारित भिन्नताओं से मुक्त रहता है।
4. इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व के विकास में विद्यालयीय वातावरण, अनुशासन एवं अध्ययन की परिस्थितियाँ अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि लिंग अपेक्षाकृत गौण कारक सिद्ध होता है।

4.4 लिंग के आधार पर व्यक्तित्व कारकों का t-परीक्षण

लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में अंतर की जाँच करने के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Samples t-test) का उपयोग किया गया। इस परीक्षण के माध्यम से यह ज्ञात करना संभव हुआ कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों के औसत स्कोर में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है अथवा नहीं। t-परीक्षण का प्रयोग लिंग आधारित भिन्नताओं की वस्तुनिष्ठ तुलना के लिए उपयुक्त एवं विश्वसनीय सांख्यिकीय तकनीक है।

सारणी

4.4: लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का t-परीक्षण (Levene's Test सहित)

विवरण	समान विचलन मानकर (Equal variances assumed)	विचलन असमान मानकर (Equal variances not assumed)
Levene का F मान	0.112	—
Sig. (Levene)	0.739	—
t मान	-0.425	-0.425
df	198	197.747
Sig. (2-tailed)	0.671	0.671
औसत का अंतर (Mean Difference)	-0.24000	-0.24000
अंतर की मानक त्रुटि (Std. Error Difference)	0.56501	0.56501
95% विश्वास अंतराल (न्यूनतम)	-1.35420	-1.35421
95% विश्वास अंतराल (अधिकतम)	0.87420	0.87421

सारणी 4.4 से स्पष्ट होता है कि Levene's Test का F मान (0.112) तथा उसका p-मूल्य (0.739) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इसका अर्थ है कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों के विचलन (variances) में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है। इसी प्रकार, t-परीक्षण का मान -0.425 तथा उसका p-मूल्य 0.671 भी 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों के औसत स्कोर में जो अंतर (0.24) पाया गया है, वह सांख्यिकीय दृष्टि से नगण्य है।

परिणामों की विवेचना:

1. Levene's Test से यह सिद्ध होता है कि दोनों समूहों (पुरुष एवं महिला) के विचलन समान हैं, अतः दोनों की तुलना करना सांख्यिकीय दृष्टि से उचित है।
2. t-परीक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि पुरुष और महिला विद्यार्थियों के औसत स्कोर में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है।
3. यह परिणाम इंगित करता है कि लिंग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों पर कोई निर्णायिक प्रभाव नहीं डालता, बल्कि दोनों समूहों का प्रदर्शन लगभग समान स्तर पर है।
4. इससे यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों को लिंग-आधारित भिन्नताओं से मुक्त रखते हुए व्यक्तित्व विकास के समान अवसर उपलब्ध कराता है।

4.5 विद्यालय-वार व्यक्तित्व कारकों का वर्णनात्मक विश्लेषण

विद्यालय-वार वर्णनात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis) का तात्पर्य है कि विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों को औसत (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), मानक त्रुटि (Standard Error) तथा न्यूनतम-अधिकतम मान के आधार पर प्रस्तुत किया जाए। इस प्रकार का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि किस विद्यालय के विद्यार्थियों का औसत स्कोर अधिक है, किन विद्यालयों के बीच अंतर है और अंकड़ों की सामान्य प्रवृत्ति (General Tendency) क्या है। वर्णनात्मक आँकड़े किसी भी अध्ययन का प्रारम्भिक चरण होते हैं, जो आगे किए जाने वाले सांख्यिकीय परीक्षण (जैसे ANOVA या t-test) के लिए आधार तैयार करते हैं।

सारणी 4.5: विद्यालय-वार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का वर्णनात्मक आँकड़ा (Descriptive Statistics)

विद्यालय (School)	संख्या (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (Std. Deviation)	मानक त्रुटि (Std. Error)	95% विश्वास अंतराल (Confidence Interval for Mean)	न्यूनतम (Minimum)	अधिकतम (Maximum)
					निचली सीमा (Lower Bound)		
1	50	28.3	2.66688	0.37715	27.5421	29.0579	22
2	50	28.04	2.89235	0.40904	27.218	28.862	21
3	50	28.12	2.6236	0.37103	27.3744	28.8656	21
4	50	27.54	2.40077	0.33952	26.8577	28.2223	22
कुल (Total)	200	28	2.6467	0.18715	27.6309	28.3691	21

सारणी 4.5 से ज्ञात होता है कि चारों विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों के औसत स्कोर लगभग समान स्तर पर पाए गए हैं। विद्यालय 1 का औसत 28.30, विद्यालय 2 का 28.04, विद्यालय 3 का 28.12 तथा विद्यालय 4 का 27.54 है। सभी विद्यालयों के औसत मान 27.5 से 28.3 के बीच हैं, जो यह दर्शाता है कि विद्यालयों के बीच व्यक्तित्व कारकों में बहुत अधिक अंतर नहीं है। मानक विचलन भी 2.40 से 2.89 के बीच है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों के स्कोर की स्थिरता लगभग समान है।

परिणामों की विवेचना:

- विद्यालय-वार औसत स्कोर में अंतर अत्यंत न्यून पाया गया है, जो यह संकेत करता है कि व्यक्तित्व कारकों के संदर्भ में चारों विद्यालयों के विद्यार्थी लगभग समान स्तर पर हैं।
- मानक विचलन का मान भी सभी विद्यालयों में लगभग समान है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तित्व विशेषताओं में अंतर की विविधता (Variation) समान रूप से पाई जाती है।
- यह परिणाम इस तथ्य को पुष्ट करता है कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में समान रूप से सहायक है, और विद्यालयीय भिन्नताओं का प्रभाव बहुत कम दिखाई देता है।
- इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय की भौगोलिक स्थिति या बाहरी अंतर से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका आवासीय व्यवस्था, अनुशासन और शैक्षिक परिवेश निभाते हैं।
- समग्र रूप से, यह कहा जा सकता है कि विद्यालय-वार तुलना में व्यक्तित्व कारकों में कोई उल्लेखनीय भिन्नता नहीं है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी विद्यालय विद्यार्थियों को व्यक्तित्व निर्माण के लिए लगभग समान अवसर प्रदान करते हैं।

5. परिणामों की विवेचना (Discussion of Results)

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि लिंग (Gender) के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों एवं अध्ययन आदतों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। t-परीक्षण के परिणाम ($p > 0.05$) दर्शाते हैं कि पुरुष और महिला दोनों ही समूहों में व्यक्तित्व लक्षणों और अध्ययन संबंधी व्यवहार में समानता विद्यमान है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और अध्ययन आदतों को प्रभावित करने में अपेक्षाकृत समान भूमिका निभाता है। इसी प्रकार, विद्यालय-वार तुलना (ANOVA results) से भी पाया गया कि चारों आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों, अध्ययन की आदतों और शैक्षिक दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। प्रत्येक विद्यालय से समान संख्या (50-50) विद्यार्थियों के चयन ने निष्पक्षता और संतुलन सुनिश्चित किया, जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय-आधारित भिन्नताओं की संभावना न्यूनतम हो गई। समग्र रूप से देखा जाए तो यह अध्ययन यह इंगित करता है कि लिंग और विद्यालय जैसे बाहरी कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अध्ययन आदतों पर नियन्यिक प्रभाव नहीं डालते। इसके बजाय, व्यक्तिगत प्रेरणा, पारिवारिक सहयोग और विद्यालयीय अनुशासन जैसे आंतरिक कारक अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आए—

- प्रस्तुत सभी परिकल्पनाएँ (H1-H4) डेटा विश्लेषण के आधार पर स्वीकृत हुईं।

- लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों एवं अध्ययन आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
- विद्यालय-वार तुलना से भी यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और अध्ययन व्यवहार में समानता है।
- अध्ययन की आदतें और व्यक्तित्व लक्षण, लिंग अथवा विद्यालय पर निर्भर नहीं हैं; बल्कि वे समान शैक्षिक वातावरण और संरचित अनुशासन के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं।
- शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक विद्यालयीय अनुशासन, शिक्षक की उपलब्धता और व्यक्तिगत अध्ययन की रुचि से जुड़े हुए हैं।

इन निष्कर्षों से यह स्थापित होता है कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों को तुलनात्मक रूप से एक समान अवसर और शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है, जिसके कारण लिंग अथवा विद्यालय-वार कोई उल्लेखनीय भिन्नता परिलक्षित नहीं होती।

7. संदर्भ (References / Bibliography)

1. रावत, हरिकृष्ण : सामाजिक शोध की विधियाँ (रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2013)
2. रॉय, बी. एन. : अनुसंधान परिचय (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2018)
3. व्यास, जगदीश प्रसाद : शिक्षा की समस्याएँ (आर्य पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2015)
4. शिक्षा अधिकारी, जयपुर : प्रकाश की ओर (निदेशालय शिक्षा, जयपुर, 2021)
5. शिक्षा निदेशालय, राजस्थान : शिक्षा की प्रगति (राजस्थान सरकार, जयपुर, 2015–2021)
6. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं कान्ह, जे. वी. : रिसर्च इन एजुकेशन (पियर्सन इंडिया, नई दिल्ली, 2016)
7. करलिंगर, एफ. एन. : फाउंडेशन्स ऑफ बिहेवियरल रिसर्च (सुरजीत पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2014)
8. कोहेन, एल., मैनियन, एल. एवं मॉरिसन, के. : रिसर्च मेथड्स इन एजुकेशन (रूटलेज, लंदन, 2018)
9. गुप्ता, एस. पी. : सांख्यिकीय विधियाँ (सुल्तान चन्द एंड संस, नई दिल्ली, 2019)
10. कौल, लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति (विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2020)
11. जायवाल, एस. आर. : शिक्षा विज्ञान कोष (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012)
12. जायसवाल, सीताराम : भारतीय शिक्षा का इतिहास (प्रकाशन केन्द्र, सीतापुर रोड, लखनऊ, 2010)
13. जायसवाल, सीताराम : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ (प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, 2015)
14. जिला अधिकारियों द्वारा प्रकाशित : जिला वार्षिक योजना और पंचवर्षीय जिला योजना (राजस्थान, 2011, 2016, 2021)
15. प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार : भारत (इण्डिया) (भारत सरकार, नई दिल्ली, 2000–2020)
16. सिंह, एच. एल. : शैक्षिक मनोविज्ञान (लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा, 2017)
17. शर्मा, रामनाथ : आधुनिक मनोविज्ञान (राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2019)
18. तिवारी, के. पी. : शिक्षा और समाज (अटलांटिक पब्लिशर्स, दिल्ली, 2018)
19. मिश्रा, आर. एस. : समाजशास्त्र और शिक्षा (अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली, 2016)
20. गोयल, बी. आर. : भारतीय शिक्षा व्यवस्था (डी. वी. प्रकाशन, मेरठ, 2014)



ISSN

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |